langen —, begehren nach: मूल्पालमोगिषु MBH. 12,4277. Mirk. P. 15, 75. BHie. P. 3,30,12 8,8,3. 9,14,10. चक्र मुन्ट्रकस्पृक्राम् Катыз. 20, 119. घनस्पृक्री (so zu lesen) न कुर्वास Pankar. 131,19. बन्ध् dass.: शम-सुधामिगिकबहस्पृक्ष Spr. (II) 4585. 2027. सस्पृक्ष Verz. d. Oxf. H. 30,6, 13. am Ende eines adj. comp. (f. द्या): गत॰ Kim. Nitis. 9,63. Spr. (II) 2796. BHie. P. 7,10,19. राड्यप्राप्ति: R. Gorr. 2,1,10. सुखेषु विगतस्पृक्: Внас. 2,56. Внас. Р. 3,15,12. वीत॰ Kir. 3,12. हिन्न॰ Внас. Р. 5,13, 16. 9,16,3. स॰ Маіткічр. 3,2. 6,30. जिप Kir. 14,36. mit infin. Riéa-Tar. 4,380. सस्पृक्म adv. Мякин. 22,21. Çik. 11,19. Vika. 13,18. Рамей. 3,6,7. सस्पृक् M. 6,96. संपूर्णस्पृक्ता Sir. D. 198. — 2) Neid. चन्तार रममाण च चक्रवाकपुग स्पृक्ता Mirk. P. 62,10. देविशेव कृतस्पृक्ः Катыз. 84,49. सस्पृक्म Rage. 13,31. Riéa-Tar. 2,170. — 3) eine best. Pflanze; s. u. स्पृश् 1) o). — Vgl. निःस्पृक्

स्पृक्तावस् (von स्पृक्ता) adj. verlangend —, begehrend nach, Wohlgefallen findend an: वस्तुषु Rass. 3, 5. Mars. P. 65,7.

स्पृद्धा (von स्पर्द्ध) 1) adj. begehrenswerth, beneidenswerth; s. u. स्पृद्धा इय 1) d). — 2) m. Citronenbaum Çabbak. im ÇKDa.

स्प्रहेत (von स्पर्श) nom. ag. 1) der da berührt, fühlt Çat. Ba. 14,7,2, 29. Pragnop. 4,9. Maitriup. 6,11. MBH. 14,619. — 2) Anfall, Krankheit AK. 3,3,14.

स्प्रिट्य (wie eben) adj. zu berühren M. 2,72. R. 4,41,60. Hir. ed. Johns. 1343.

स्पञ्ज m. sehlerhast für स्पूर्ज; s. नर्मस्पूर्ज in den Nachträgen und vgl. Hall in der Einl. zu Dagan. 22.

स्पार् स्फैटित (विसर्पो) Deltup. 9,44, v. l. (शीर्पो) Kavikalpadauma im ÇKDa. — caus. स्पारपति (विसापाम्) Deltup. 32,90, v. l. स्पारित (v. l. स्पारित) gesprungen, gespalten Suça. 1,301,1. zerrissen: ein Gewand Hit. 49,11. Varae. Bae. 2,12. श्रस्पारित s. u. पर 2) in den Nachträgen.

FIG. 1) m. und FIG. f. = $\frac{1}{1}$ f. = $\frac{1}{1}$ die sogenannte Haube der Schlangen AK. 1,2,2,2,9. H. 1315, Schol. — 2) f. $\frac{1}{5}$ Alaun Riéan. 13,121.

स्पादिक (von स्पाद) 1) m. Bergkrystall Montgomean Martin, Eastern India 1,243. HIOUBN-THEANG 1,482. 2,179. AK. 3,4,1,4. HALAJ. 2,21. Riéan. 13, 204. Çveriçv. Up. 2, 11. Jién. 1,296. चित्रस्पाटिकासीपाना МВн. 2,89. 14,1728. য়र्कास्पारिकायुध 5,3576. Напіч. 13158. R. 2,30,24. Suça. 1,28, 5. 228, 5 (unter den edlen Steinen). 917 240,16. 303,6. 315, 7. 2,328, 13 (v. 1. FUTO). 336, 16. MEGH. 52. 63. 77. RAGE. 10,19. 13,69. Spr. (II) 4705. VARAH. BRH. S. 4,80. 8,58. 12,5. 20. 54,110. 64, 1. 68,89: काचस्पारिकाखएडा: KATHÅS. 24,178. 50,191. स्पारिकापाएड्र-लिष् 109,42. Verz. d. Oxf. H. 238,b,7. 250,a,16. Pankar. 1,7,2. स्फारि-कालमालिका Kumisas. 5,68. शुद्धस्फारिकमाला Panéas. 1,4,5. 7,88. ्ह-म्पं Komâras. 6,42. ेभित्ति Kir. 5,81. ेनुद्ध Beig. P. 3,15,21. 33,17. 4,9,62. ेलाकित्य (vgl. लेकितीन: स्पारिन: P. 5,3,110, Schol.) Schol. zu Кар. 1,59, °中间 Рвав. 15,5. 26,5. स्पारिकाञ्चन Çаврав. bei Wilson; गोलीर o (vgl. नीर o) Аматан. Up. in Ind. St. 9,37. drei Arten Viáaspati beim Schol. zu H. 1068. — 2) f. आ Alaun Bulvapa, im ÇKDa. Kampfer Ridan. 12,61. — Vgl. तीर् , ख॰, तेल॰, पिङ्ग॰, पीत॰, विद्य॰ und स्पारिक.

VII. Theil.

स्फिरिकामय (von स्फिरिका) adj. (f, ई) krystallen Kathâs. 50,191. स्फिरिकायशम् m. N. pr. eines Vidjådhara Kathâs. 59,10. 66,190. स्फिरिकाचल (स्फिरिका → अ०) m. der Berg Kailåsa H. 1028. स्फिरिकात्मन् m. = स्फिरिक Çadas. im ÇKDa. fehlerhaft für स्फिरि-काश्मन् (so Wilson nach derselben Aut.).

स्फरिकाद्रिभिद् m. Kampfer Çabdârthar. bei Wilson. स्फरिकारि f. Alaun Ratnâv. im ÇKDa. ्कारिका ÇKDa. nach Внампайлаватийу.

स्कार्ट, स्कैएटित (विसर्गो) Dalive. १,४४, v. j. स्कएटपित und स्कार्ट्, स्काउयित (परिकास) ३२,४, v. l.

स्कार्, स्कार्गित (स्कार्गो, Vop. स्कूर्ती चले) Duatup. 28,95.— caus. स्कार्यात = स्कार्गित P. 6,1,54. Vop. 18, 17. aussinanderziehen, weit öffnen: कार्मुकं स्कार्यामास er spannte den Bogen R. 5,44,4. स्कारित weit geöffnet, aufgeriesen: Augen Milatim. 60,12. Spr. (II) 2915. Z. d. d. m. G. 27,27. Duatas. 66,8. weithin verbreitet: तेजस् Spr. (II) 1419.

- नि oder निस् s. निष्कार in den Nachträgen.
- परि caus. क्पार्यति verbreiten Vjutp. 52.
- वि caus. विस्पार्यित aussinandersiehen, weit öffnen: einen Bogen (50 v. a. spannen) MBB. 1,6442. 4,1656. 1852 (विस्पार्य mit der ed. Bomb. zu lesen). 1861. 1918. 2022 (विस्पा° mit der ed. Bomb. zu lesen). 6,1957 (विस्पार्य st. विस्पुर्य mit der ed. Bomb. zu lesen). 2011. 2663 (विस्पा° mit der ed. Bomb. zu lesen). 7,4589. 13,4619. HARIV. 2509. 6892. 11062 (S. 791). 13294. 13345. R. 3,30,28. 34,29. 42,32. 68,48. 5,39,17. 40,4. 6,20,15. 36,70. 79,9. 7,22,19. 28,45. विक्षांविस्पारितचापमाउल (= निर्धाषित MALLIN.) KIR. 14,31. 17,24. BRATT. 14,17. weit aufreissen (die Augen): क्राधविस्पारितचाप MBB. 3,404. 7,654. 7493. R. 1,54,19. 2,22,1. 5,55,35. 93,15. 7,28,12. विस्पारित सर्वाङ्ग aussinandergerissen MBB. 7,4126 nach der Lesart der ed. Bomb. (विस्पारित ed. Calc.). विस्पारित n. das Schnellen: गाएडीवविस्पारित खब्द MBB. 5,762. धनुविस्पारितस्व R. 3,41,25. Vgl. विस्पारित.

स्पार m. Schild, scutum H. 783 (v. l. स्पुर). auch ेन m. Schol. H. an. 2,467.

स्पार्ण (von स्पार्) n. = स्पुर्ण AK. 3,3,10. H. 1523. स्पाल, स्पालैति (चले, स्पूर्ती) Vop. 28,96, v. l.

- श्रा caus. ेस्पालयति 1) anprallen lassen an, schlagen —, patschen anf: गर्जन गर्जमास्पालय र्थेन र्थयोधिनम् Hariv. 6223. भूमिम् Karaka 2,8. श्रास्पालितं प्रमदाकरायेरम्भ: Rage. 16,18. प्याराशेराध: प्रलयपवनास्पालितः UTTARAR. 94,17 (123,4). जलिम्धिरास्पालितो वीचिभः मलयाचलः Nigin. 8. शिलायाम् schleudern gegen Pankar. 93,17. लाङ्कलम् mit dem Schweife schlagend Katriss. 60,102. धनु: UTTARAR. 111,10 (180, 8). 2) zerreissen: वासासि Beia. P. 10,67,15. Vgl. झास्पाल ig.
 - समृद् s. समृत्फालः
 - वि इ. विस्फाल
- सम् caus. patschen auf oder zerschellen: वृषाणी Taitt. An. 1,26, 3. — Vgl. संस्पाल.

स्पा इ. स्पाय्.

स्पाक (von स्पाप्) s. पोवः

स्पादिका 1) m. Wassertropsen Çabdarthak. bei Wilson. -- 2) n. =

86*